ॐ जय जगदीश हरे

ओम जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे
भक़्त जनों के सकंट, दास जनों के सकंट
क्षण में दूर करे
ओम जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का
स्वामी दुख विनशे मन का
सुख सम्पती घर आवे, कष्ट मिटे तन का
ओम जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे शरण गहुं मैं किसकी
स्वामी शरण गहुं मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा, आस करुं मैं किसकी
ओम जय जगदीश हरे

तुम पूरण परमात्मा तुम अतंरयामी
स्वामी तुम अतंरयामी
परम ब्रम्ह परमेश्वर, तुम सबके स्वामी
ओम जय जगदीश हरे

तुम करुणा के सागर तुम पालन करता
स्वामी तुम पालन करता
दीन दयालु कृपालु , कृपा करो भरता
ओम जय जगदीश हरे

तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पती

स्वामी सबके प्राण पती
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती
ओम जय जगदीश हरे

दीन बंधु दुख हरता तुम रक्षक मेरे
स्वामी तुम रक्षक मेरे
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पडूं मैं तेरे
ओम जय जगदीश हरे

विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा
स्वामी पाप हरो देवा
श्रध्दा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा
ओम जय जगदीश हरे ॥